प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण
का
द्विवर्षीय पाठ्यक्रम आधारित नोट्स

Year : 2nd

Paper : 5th

Subject : HINDI

Compiled & Edited by : Mrs. Sushila Ekka

PRIMARY TEACHERS EDUCATION COLLEGE

Gurwa, P. O.- Sitagarha, Dist. – Hazaribag -825 303, Jharkhand, INDIA

(A Jesuit Christian Minority Institution)

Recognized by ERC, NCTE vide order No. BR-E/E- 2/96/2799(12) dt 11.02.1997

Phone No. 06546-222455, Email: ptecgurwa1997@rediffmail.com Website: www.ptecgurwa.org

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

<u>अनुक्रमणिका</u>

<u>द्वितोय वर्ष</u>

<u>(HINDI)</u>

इकाई 5 – हिन्दो भाषा मं सहायक शिक्षण सामगो (उपकरण)

भाषा की शिक्षा में दृश्य–श्रव्य उपकरण :–

हिन्दी शिक्षण में श्रव्य–दृश्य साधनों के प्रयोग की आवश्यकता एवं उपयोगिमा पर प्रकाश डालें?
अथवा
हिन्दी शिक्षण में जिन विभिन्न सहायक सामग्रियों का प्रयोग किया जा सकता है उनका वर्णन कीजिए ?
अथवा
दृश्य–श्रव्य साधनों से आप क्या समझते हैं ? भाषा शिक्षण में इनका क्या महत्व है ?
अथवा
हिन्दी शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त आप किन सहायक सामग्रियों का प्रयोग करेंगे।
अथवा
श्रव्य साधनों से आप क्या समझते हैं ? प्रमुख श्रव्य साधनों पर संक्षेप में प्रकाश डालें।

उत्तर :–भाषा शिक्षण को प्रभावशाली तथा राचक बनाने के लिए वर्त्तमान परिवेश में शिक्षण/अध्यापन में सहायक सामग्रियों को विशेष स्थान दिया गया है। सहायक सामग्रियों से तात्पर्य विषय को स्पष्ट करने तथा उसे आकर्षक और रूचिकर बनाने के लिए कठिन विषय को सरल तथा सुबोध बनाने के लिए। जिस वस्तु का भी उपयोग किया जाता है। वह सहायक सामग्री ही कहलाती है।

ज्ञानेन्द्रियों के अनुभव द्वारा ही किसी वस्तु या क्रिया का मानसिक चित्र बनता है। और इस मानसिक चित्र के आधार पर तत्संबंधी ज्ञान प्राप्त होते हैं। अतः शिक्षण द्वारा ज्ञान के प्रत्यक्षीकरण के लिए आवश्यक है कि शिक्षण कार्य में आवश्यकतानुसार ऐसे शैक्षणिक उपकरण या दृश्य–श्रव्य साधनों का उपयोग किया जाय जिसके माध्यम से वस्तु भाव या विचार का बिम्बग्रहण हो सके।

इस प्रकार व्यापक दृष्टि से शैक्षणिक उपकरणों का तात्पर्य शिक्षण के लिए प्रयुक्त उन सभी साधनों से है कजिनके द्वारा शिक्षण कार्यों में सहायता मिलती है और पाठ को संप्रेषणीय बनाने के लिए सुगमता प्राप्त होती है।

सहायक शैक्षिक उपकरण का महत्व एवं आवश्यकता :–

शिक्षण क्रिया को सरल, सजीव, सुग्राहय एवं प्रभावपूर्ण बनाने के लिए यह आवश्यक है कि नवीन ज्ञान, भाव एवं विचार इस प्रकार प्रस्तुत किए जाय कि उनका स्वरूप प्रत्यक्ष स्पष्ट एवं मूर्त हो सके। वस्तुतः यही कारण है कि शिक्षण में सहायक शैक्षणिक उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। इन उपकरणों की सहायता से अमूर्त एवं सूक्ष्म बातों को मूर्त सरल एवं स्वरूपगत बनाया जा सकता है। इनके प्रयोग से पाठों को क्रियात्मक एवं व्यवहारिक बनाने में सहायता मिलती है।

इस प्रकार भाषा शिक्षण में सहायक सामग्री का अपना विशेष महत्व है। सहायक सामग्री के माध्यम से छात्रों का ध्यान पाठ्य विषय पर सरलता से केन्द्रित किया जा सकता है। इसमें प्रयोग द्वारा पाठ को सजीव तथा सरस बना देते हैं। परिणामस्वरूप छात्र कक्षा में श्रोता मात्र न रहकर सक्रियता से विषय को समझ जाते हैं। इसके द्वारा छात्र–छात्राओं के ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों को क्रियाशील रखा जा सकता है। छात्रों को प्रत्यक्ष अनुीाव होता है। इससे उन्हें स्वयं सीखने की प्रेरणा मिलती है। इतना ही नही क्रमित रूप से विचार श्रृंखला को स्थायित्व प्राप्त होता है।

दृश्य–श्रव्य साधनों के भेद :–

सहायक शिक्षण सामग्रियों को मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है :–

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

(1) मौखिक साधन :—

मौखिक साधनों में मुख्य रूप से मौखिक उदाहरण प्रश्नों को समझाना आदि आते है।

(2) दृश्य—श्रव्य साधन :—

दृश्य श्रव्य साधन में श्यामपट्ट, चित्र, चलचित्र, रेडियो, टेलीविजन, ग्रामोफोन, टेप रिकॉर्डर, मानचि, सरस्वती यात्राएँ आदि आते हैं।

इन्द्रियों के प्रयोग के आधार पर दृश्य—श्रव्य साधनों को तीन वर्गो में बाँटा गया है :—

i) *दृश्य साधन :—*

दृश्य साधन से तात्पर्य उस साधन से है, जिससे हमारी दृश्येन्द्रियाँ प्रभावित होती है। अर्थात् जिस सामग्री के प्रयोग से हमें देखना पड़े और देखकर ज्ञान प्राप्त करते हैं, उसे दृश्य सामग्री कहते हैं। भाषा शिक्षण में प्रयोग में आने वालो प्रमुख दृश्य साधन निम्नांकित है। श्यापमट्ट चार्ट, मानचित्र, रेखाचित्र चार्ट, वास्तविक वस्तु, मैजिक लैंटर्न।

ii) श्रव्य साधन :—

श्रव्य साधन उन साधनों को कहते हैं जिनमें हमारी कवेन्द्रिय (श्रवणेन्द्रिय) प्रभावित होती है। अर्थात् जिन उपकरणों से सुनकर हम ज्ञान प्राप्त करते ह उससे पाठ को रोचक बनाया जा सकता है। साधनों को श्रव्य साधन कहते हैं। इसमें मुख्य रूप से रेडियो, ग्रामोफोन और टेपरिकॉर्डर है।

iii) दृश्य—श्रव्य साधन :—

इन साधनों में दृश्य इन्द्रिय और श्रवणेंन्द्रिय दोनों का प्रयोग होता है। इसके अन्तर्गत टेलीविजन, चलचित्र और नाटक, मुख्य रूप से हैं।

मुख्य दृश्य साधन :—

1. श्यामपट्ट :—

श्यामपट्ट दृश्य सामग्रियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण सामग्री है। श्यामपट्ट शिक्षक का सबसे घनिष्ट एवं सच्चा मित्र है। शिक्षक श्यामपट्ट के आभाव में समुचित शिक्षण नहीं कर सकता है। भाषा शिक्षण में सबसे अधिक उपयोग श्यामपट्ट का होता है। अन्य सभी उपकरणों की पूर्ति श्यामपट्ट से हो सकती है। अन्य साधन के आभाव में शिक्षक श्यामपट्ट पर चित्र, मानचित्र, रेखाचित्र आदि बनाकर पाठ को सरल बना सकता है, श्यामपट्ट इस प्रकार की कार्य में शिक्षक को अत्यंत सहयोग प्रदान करता है। शिक्षक को पाठ का शारांश, उद्धरण, शब्दार्थ, नए शब्द, सूक्तियों, मुहावरों या अन्य वाक्यों को लिखता है।

इस प्रकार श्यामपट्ट शिक्षक का अभिन्न मित्र है। भाषा की सभी विधाओं में श्यामपट्ट से सहयोग लेना पड़ता है। श्यामपट्ट पर लिखे बिना शिक्षक किसी भी पाठ को स्पष्ट नहीं कर सकत। इस संदर्भ में पंडित सीताराम चतुर्वेदी का कहना है ''जिस प्रकार चित्रकार के लिए फलक और पुलिका वांछनीय है, ठीक उसी प्रकार अथवा उससे भी कुछ अधिक अध्यापक के लिए श्यामपट्ट और खल्ली के टुकड़े का महत्व है। ये दोनों वस्तु शिक्षक की सतत् संग्गिनी है।

2. मूल वस्तु या वास्तविक पदार्थ :—

मूल वस्तु या वास्तविक पदार्थों का प्रयोग का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उनको देखने से छात्रों को प्रत्यक्ष अनुभव मिलता है। वे स्वयं अपनी—अपनी आँखों से प्रत्येक वस्तु को देखकर स्थायी स्थान प्राप्त करते हैं। भाषा की पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न विषयों से संबंधित पाठ होते हैं। अतः छात्रों को पाठ से संबंधित मूल

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

वस्तु आवश्यक दिखाई जानी चाहिए। उदाहरण के लिए यदि कोई पाठ मुद्रण कला से संबंधित है तो छात्रों को वास्तविक ज्ञान प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें प्रेस में लेकर मुद्रण यंत्र दिखाए जाए।

3. **चित्र :–**

भाषा के शिक्षण में अन्य सहायक सामग्री समान चित्रों का भी अपना विशेष महत्व है। छोटी–कक्षाओं के छात्रों को चित्र बहुत अच्छी लगती है। प्रत्येक पाठ से संबधित चित्र देखकर दोटे बालक बहुत पसंद करते हैं। जैसे कि कहानी को सुनाते समय चित्रों का प्रयोग अत्यंत रोचक रहता है। चित्रों का उपयोग करने से सबसे बड़ा लाभ यह है, इससे छात्रों में निरीक्षण शक्ति का विकास होता है। उनमें विश्लेषण करने की प्रवृत्ति जागृत होती है। पाठ्य–पुस्तकों में चित्रों का विशेष महत्व है। परन्तु ये चित्रण स्पष्ट तथा शुद्ध होने चाहिए।

4. **मानचित्र :–**

भाषा की पाठ्यपुस्तकों में कुछ पाठ ऐतिहासिक भौगोलिक तथा यात्रा संबंधी होते हैं, इस प्रकार के पाठों को रोचक तथा प्रभावशाली बनाने के लिए ऐतिहासिक तथा भौगोलिक मानचित्र का प्रयोग किया जा सकता है। मानचित्र के माध्यम से स्थान की स्थिति लंबाई, चौड़ाई, चौहदी आदि बतलाकर स्पष्ट किया जा सकता है। जिसे विषय सरल तथा स्पष्ट हो जाता है।

5. **चार्ट :–**

चार्ट का प्रयोग किसी विषय को सम्यक् रूप में समझने तथा उनके मुख्य बिन्दुओं को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। चार्ट स्पष्ट और सुन्दर होना चाहिए, किसी भी पाठ को पढ़ाते समय उसके मुख्य बिन्दुओं को चार्ट में दर्शाया जा सकता है। व्याकरण शिक्षण में भी परिभाषा एवं भेदों को बतलाने के लिए चार्ट का सहारा लिया जा सकता है।

6. **मैजिक लैंटर्न :–**

यह एक छोटा यंत्र है इसके अन्दर स्लाइडस का प्रयोग किया जाता ह। विभिन्न उद्देश्यों भावों योजनाओं महापुरूषों की जीवनी तथा क्रियाओं के स्लाइडस तैयार किए जाते हैं तथा उनको इसके माध्यम से आवश्यकतानुसार छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। गाँव अथवा मेला आदि के स्लाइडस दिखलाकर छात्रों को निबनध लिखने के लिए उत्साहित किया जा सकता है।

7. **सरस्वती यात्राएँ (पर्यटन) :–**

अवकाश के क्षण में छात्र प्रायः बिना उद्देश्य घूमा करते हैं अतः इन्हीं अवकाश के क्षणों में परिभ्रमण या सरस्वती यात्राओं के द्वारा उनकी घूमने फिरने की इच्छाओं को संतुष्ट कर उचित मार्ग पर लाया जा सकता है। ज्ञानवर्धक स्थान भाषा संबंधी यात्रा, किसी पुस्तकालय या कवियों के जन्म स्थान पर उन्हें ले जाकर उनके बारे शिक्षा दी जा सकती है। प्रत्येक यात्रा के पश्चात् छात्रों को यात्रा वर्णन संबंधी निबंध लिखवाना अत्यंत ही उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

भाषा शिक्षण में दृश्य शिक्षण सामग्री पूर्णतः उपयोगी एवं सार्थक है। शिक्षक रूपी कलाकार इसके प्रयोग से शिक्षण को जीवंत बना सकता है।

मुख्य श्रव्य उपादान :–

1. **रेडियो :–**

बच्चे की संपूर्ण शिक्षा में रेडियो का अपना स्थान है यह मनोरंजन का लोकप्रिय संसाधन है। शिक्षा के क्षेत्र में यह ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक दोनों है। आकशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से तथा बालकों के विभिन्न शिक्षाप्रद कार्यक्रमों का प्रसारण होता है आजकल रेडियो द्वारा प्रौढ़ शिक्षा तथा स्त्री शिक्षा के प्रसार को सहायता मिल रही है। समय–समय पर विद्यालयों के छात्रों के लिए उपयोगी कार्यक्रम प्रसारित किए जाते

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

हैं। जैसे : वाद–विवाद, नाटक, कहानी, कविता पाठ इत्यादि। रेडियो पर सर्वमान्य एवं व्याकरण संवत् का प्रयोग किया जाता है। दूसरे छात्र को सुनाकर सर्वमान्य भाषा का ज्ञान दिया जाता है। साथ ही उनका उच्चारण शुद्ध होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि रेडियो ज्ञान के विकास का एक अनुपम साधन है।

2. ग्रामोफोन :–

भाषा शिक्षण में ग्रामोफोन एक लाभदायक सामग्री है। बच्चों के उच्चारण को शुद्ध करने, उन्हें पठन कला में निपुण करने और उनकी मौखिक अभिव्यक्ति शक्ति में विकास करने के लिए यह बहुत ही सहायक है। कविता पाठ एवं नाटकीय संवादों की शिक्षा ग्रामोफोन की सहायता से दी जाती है। इसके अतिरिक्त सुन्दर गीत कविता तथा पद्यांशों को सुनाकर उनका ध्यान साहित्य की ओर आकृष्ट किया जाता है। रचना की शिक्षा में ग्रामोफोन का प्रयोग किया जाता है। किसी विषय से संबंधित चित्र दिखाकर यथाचित्र के रिपोर्ट चढ़ा देते हैं। रिर्पोट के ध्वनि के साथ–साथ शिक्षक शीघ्र दिखाये जाते हैं। अंत में उस चित्र का वर्णन अपनी–अपनी पुस्तिकाओं में लिखने के लिए कहा जा सकता है। इस तरह अनुकरण द्वारा वर्णन करने की शक्ति विकसित करने की विधि यह एक अच्छी विधि है।

3. टेपरिकॉर्डर :–

यह एक नया अविष्कार है। इसकी सबसे बड़ी उपयोगिता इस बात की है इसमें किसी भी स्थान पर कोई भी ध्वनि भरी जा सकती है और उसे पुणः सुना जाता है। टेपरिकॉर्डर में शिक्षक या छात्र अपनी आवाज भर सकते हैं फिर उसे सुनकर अपने उच्चारण, बोलने की गति, स्वर प्रवाह आदि को ठीक कर सकते हैं। इसमें बच्चों की आयु के अनुसार, नाटक, कहानी आदि को रिकॉर्ड कर बच्चों का शिक्षात्मक मनोरंजन किया जा सकता है। महापुरूषों के भाषण तथा उपदेश के रिकॉर्ड सुनाकर बच्चों को नैतिक शिक्षा दी जा सकती है।

मुख्य दृश्य–श्रव्य साधन :–

1. टेलीविजन :–

यह एक प्रभावशाली दृश्य–श्रव्य साधन है इससे बालकों के ज्ञान क्षेत्र को व्यापक बनाया जा सकता है। इसके द्वारा हमारी सुनने वाले इंद्रियाँ और देखने वाली इंद्रियाँ प्रभावित होती है। रेडियो द्वारा हम केवल सुनते हैं जबकि टेलीविजन पर सुनने के साथ–साथ कार्यक्रम में भाग लेने वालों को देखते भी है। दूरदर्शन पर भाषा संबंधी कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। समय–समय पर वाद–विवाद, कविता पाठ, नाटक, कहानी आदि प्रसारित किए जाते हैं, इन कार्यक्रमों को बच्चों को दिखाकर हाव–भाव के साथ बोलना बातचीत करना, भाषण देना, कविता पाठ करना, अभिनय करना तथा शुद्ध उच्चारण करना सिखाया जाता है। अतः टेलीविजन में भाषा संबंधी कार्यक्रम आवश्य दिखाना चाहिए।

2. चलचित्र या सिनेमा :–

चलचित्र जहाँ एक ओर मनोरंजन का साधन है वहीं दूसरी ओर ज्ञान प्राप्ति का साधन है। चलचित्र द्वारा शिक्षक का कार्य जितना प्रभावशाली हो तथा आकर्षक बनाया जा सकता है उतना किसी और वस्तु के द्वारा नहीं। इससे सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसमें आवाज के साथ दृश्य भी दिखाई देते हैं। बच्चों को ऐतिहासिक घटनाएँ और भिन्न विषयों से संबंधित चलचित्र दिखाना चाहिए। चलचित्र द्वारा उन स्थानों का ज्ञान बच्चों को कराया जा सकता है साथ ही विभिन्न देशों के रीति–रीवाज आदि का भी परिचय बच्चों को हो जाता है। ऐतिहासिक और धार्मिक चित्र लोगों को उत्तम मार्ग दिखाते हैं ऐसे चित्रों के द्वारा छात्रों को उनके चरित्र निर्माण मे सहायता दे सकते हैं इसके अतिरिक्त चलचित्र हमारी भावनाओं प्रवृत्तियों तथा उद्वेगों

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

शांत करने में सहायक होते हैं बच्चों की भाषा पर चलचित्र का अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। अतः बच्चों को चलचित्र दिखाने के लिए शिक्षक को सतर्कता रखनी चाहिए।

3. नाटक :–

नाटक एक अत्याधिक उपयोगी प्राचीन दृश्य–श्रव्य साधन है आजकल भाषा शिक्षण में छात्रों की रूचि बढ़ाने की दृष्टि से इस साधन का उपयोग किया जा रहा है। इसलिए विद्यालय में समय–समय पर नाटक आयोजन किया जाना चाहिए। इसके लिए विद्यालय में रंगमंच होना आवश्यक है क्योंकि अभिनय के साथ छात्र शब्द उच्चारण करना भाव के साथ बोलना और शिष्टाचार संबंधी बातें सीखते हैं।

ऊपर वर्णित सभी साधन महत्वपूर्ण शिक्षक को इन साधनों का प्रयोग अपने शिक्षण कार्य में आवश्य करना चाहिए।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG